अध्याय - 21
वैश्वीकरण

हम पढ़ेंगे

21.1 वैश्वीकरण से आशय
21.2 वैश्वीकरण को प्रोत्साहित करने वाले तत्व
21.3 वर्ष 1991 से पूर्व भारत का विकास
21.4 वैश्वीकरण एवं भारत (वर्ष 1991 के बाद भारत का विकास)
21.5 वैश्वीकरण से उत्पन्न समस्याएँ

आज के विश्व में एक उपभोक्ता के समक्ष वस्तुओं एवं सेवाओं के अनेक विकल्प उपस्थित हैं। विश्व के विकसित देशों में उत्पादित कैमरे, मोबाइल फोन और टेलीविजन के नवीनतम मॉडल सस्ते दामों में आज हमारे समक्ष उपलब्ध हैं। भारतीय सड़कों पर कुछ वर्षों पूर्व केवल एम्बेसेडर और फिएट कारें ही दिखाई देती थीं। किन्तु आज विश्व की सभी कम्पनियों द्वारा निर्मित कारें भारत में उपलब्ध हैं। यह स्थिति केवल कारों की ही नहीं हैं वरन् विभिन्न देशों के कपड़े, फल, डिब्बे बन्द खाद्य पदार्थ जैसी वस्तुएँ भी भारत के बाजारों में उपलब्ध हैं। यहाँ यह तथ्य विशेष उल्लेखनीय है कि वस्तुओं एवं सेवाओं के यह विकल्प दो दशकों से ही उपलब्ध हैं। इससे पूर्व हमें केवल देश में निर्मित वस्तुएँ ही उपलब्ध थीं।

वास्तविकता यह है कि विदेशी व्यापार ने आज विश्व के देशों को परस्पर जोड़ दिया है। विश्व की अनेक बड़ी कम्पनियाँ, जिन्हें बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कहा जाता है, अपने उत्पादों की बिक्री अनेक देशों में करती हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी वह है जो एक से अधिक देशों में उत्पादन करती हैं। ये कम्पनियाँ बड़े पैमाने पर उत्पादन करती हैं और उत्पादित वस्तुओं को अनेक देशों में बेचती हैं।

21.1 वैश्वीकरण से आशय

बढ़ते हुए विदेशी व्यापार के कारण विभिन्न देशों के बाज़ारों एवं उनमें बेची जाने वाली वस्तुओं में एकीकरण हुआ है। विदेशी व्यापार की बढ़ती हुई प्रवृत्ति ने अब विभिन्न देशों के बाज़ारों को बहुत निकट ला दिया है। उन्नत प्रोद्योगिकी ने इस निकटता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है और सम्पूर्ण विश्व को एक बड़े गाँव में बदल दिया है। यही वैश्वीकरण है, जहां विभिन्न देशों के बाजार परस्पर जुड़कर एक इकाई के रूप में कार्य करते हैं।

इस प्रकार वैश्वीकरण से आशय सम्पूर्ण विश्व का परस्पर सहयोग एवं समन्वय से एक बाजार के रूप में कार्य करने से है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत वस्तुओं एवं सेवाओं के एक देश से दूसरे देश में आने एवं जाने के अवरोधों को समाप्त कर दिया जाता है। इससे सम्पूर्ण विश्व में बाज़ार शक्तियाँ स्वतंत्र रूप से कार्य करने लगती हैं और परिणामस्वरूप वस्तुओं की कीमतें सभी देशों में लगभग समान हो जाती है। इस प्रकार वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण विश्व के बाजारों का एकीकरण हो जाता है।

अत: यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत सभी व्यापारिक क्रियाओं का अन्तर्राष्ट्रीयकरण हो जाता है और वे एक इकाई के रूप में कार्य करने लगती हैं।

21.2 वैश्वीकरण को प्रोत्साहित करने वाले तत्व

1. **तकनीकी ज्ञान का विस्तार** - पिछले 50 वर्षों में तकनीकी ज्ञान का तेजी से विकास हुआ है। परिवहन प्रोद्योगिकी ने अब लम्बी दूरी तक वस्तुओं को कम लागत पर भेजना सम्भव बनाया है। दूर संचार सुविधाओं, जैसे इंटरनेट, मोबाइल फोन, फैक्स आदि ने विश्वभर में एक दूसरे से सम्पर्क करने के कार्य को सरल बना दिया है।

संचार उपग्रहों ने इन सुविधाओं का विस्तार कर क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया है। फलतः वैश्वीकरण का तेजी से विस्तार हुआ है।

2. उदारीकरण की प्रक्रिया – बीसवीं शताब्दी के मध्य तक उत्पादन मुख्यतः देशों की सीमाओं के अन्दर ही सीमित था। अनेक देशों ने अपने द्वारा उत्पादित वस्तुओं को विदेशी प्रतियोगिता से बचाने के लिये अनेक प्रकार के कठोर प्रतिबन्ध लगा दिये थे। भारत ने भी 1950 एवं 1960 के दशकों में केवल अनिवार्य वस्तुओं जैसे मशीनरी, उर्वरक और पेट्रोलियम के आयात की ही अनुमति दी थी। इस नीति से देश में अनेक उद्योगों का विकास हुआ और भारत अनेक क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बन गया।

किन्तु 1970 एवं 1990 के दशकों में अनेक ऐसे परिवर्तन हुए जिनसे विदेशी व्यापार को उदार बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। उदाहरणार्थ – सोवियत संघ का विघटन, यूरोप का आर्थिक एकीकरण, जापान का विश्व की प्रमुख शक्ति के रूप में प्रकट होना और कोरिया, सिंगापुर, हांगकांग जैसे देशों की आर्थिक प्रगति। फलतः विश्व के अनेक देशों में विश्व व्यापार को उदार बनाने पर सहमति हुई। इससे उदारीकरण की प्रक्रिया को बल मिला। सन् 1995 में विश्व व्यापार संगठन की स्थापना के बाद प्रायः विश्व के सभी देशों ने अपने आयात करों में कमी की है और अपने देश के बाजार को अन्य देशों के लिये खोल दिया है।

3. प्रतियोगिता एवं बाजार का विस्तार – पूंजीवादी आर्थिक प्रणाली में प्रतियोगिता का विशेष महत्व है। इस प्रणाली में विभिन्न उत्पादक कम्पनियाँ बाजारों पर कब्जा करने के उद्देश्य से प्रतियोगिता का सहारा लेती हैं। इसके लिये ये कम्पनियाँ कीमत कम करने के साथ-साथ विज्ञापनों एवं प्रचार-प्रसार के विभिन्न माध्यमों का उपयोग करती हैं।

पिछले कुछ वर्षों में उपभोक्ताओं की आय में वृद्धि, उपभोक्ता प्रवृत्ति, रुचि एवं आदतों में परिवर्तन आदि से वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग में वृद्धि हुई है। प्रौद्योगिकी के विकास से उत्पादनों की किस्म एवं गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। फलतः नई-नई वस्तुओं का उत्पादन सम्भव हुआ है जिससे बाजारों का विस्तार हुआ है।

4. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का विस्तार – दूरस्थ देशों को आपस में जोड़ने में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का विशेष महत्व है। ये कम्पनियाँ उन देशों में उत्पादन के लिए कारखाने स्थापित करती हैं, जहां उन्हें सस्ता श्रम एवं अन्य साधन मिलते हैं। इससे उत्पादन लागत में कमी आती है तथा कम्पनियों की प्रतियोगिता करने की क्षमता बढ़ जाती है।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ केवल वैश्विक स्तर पर ही अपने उत्पादन नहीं बेचतीं वरन अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वे वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन विश्व स्तर पर करती हैं। उदाहरण के लिए औद्योगिक उपकरण बनाने वाली एक बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनी अमेरिका के अनुसंधान केन्द्र में अपने उत्पादों का डिजाइन तैयार करती है। उसके पुर्जे सस्ते श्रम होने के कारण चीन में बनते हैं। फिर इन पुर्जों को लादकर मेक्सिको और पूर्वी यूरोप ले जाया जाता है, जहाँ इन्हें जोड़ा जाता है। इसी बीच, कम्पनी की ग्राहक सेवा का भारत स्थित कॉल सेंटरों के माध्यम से संचालन होता है।

इस उदाहरण से स्पष्ट है कि चीन एक सस्ता विनिर्माण केन्द्र होने का लाभ प्रदान करता है। मेक्सिको, पूर्वी यूरोप, अमेरिका आदि देश निर्मित वस्तु की बिक्री के कारण लाभप्रद हैं। भारत में कुशल इंजीनियर उपलब्ध हैं जो उत्पादन के तकनीकी पक्षों को समझते हैं। यहां अंग्रेजी बोलने वाले शिक्षित युवक भी हैं, जो ग्राहक देखभाल सेवाएँ उपलब्ध करा सकते हैं। इन सभी बातों से वस्तुओं की उत्पादन लागत में कमी आई है और उत्पादन करने वाली कम्पनियों का लाभ बढ़ गया है। फलतः विश्व में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की संख्या बढ़ गई है और उनके कार्यक्षेत्र का विस्तार हो गया है। अनेक भारतीय कम्पनियों को भी बहुराष्ट्रीय होने का श्रेय प्राप्त हो गया है।

5. विदेशी व्यापार में विस्तार – द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद प्राय सभी देशों के विदेशी व्यापार में वृद्धि हुई है। विश्वबैंक एवं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने भी व्यापार के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इससे उत्पादकों को अपनी वस्तुओं को घरेलू बाजार के साथ-साथ विश्व बाजार में बेचने का अवसर प्राप्त हुआ है। विदेशी व्यापार के विस्तार से जहाँ उत्पादन की मात्रा में वृद्धि हुई वहीं उत्पादकों को श्रम विभाजन एवं विशिष्टीकरण का लाभ प्राप्त हुआ है। इससे उत्पादन लागत में कमी आई और उत्पादकों को प्रतियोगिता करने का अच्छा अवसर मिला।

वर्ष 1995 में विश्व व्यापार संगठन की स्थापना के बाद तो विश्व व्यापार में तेजी से वृद्धि हुई है। सभी देशों ने संरक्षण की नीति के स्थान पर स्वतंत्र व्यापार से जुड़ी नीतियों को अपनाया है। परिणामस्वरूप वैश्वीकरण की प्रक्रिया में तेजी आई है।

21.3 वर्ष 1991 से पूर्व भारत का विकास

स्वतंत्रता के बाद से भारत में आर्थिक नियोजन को अपनाया गया। वर्ष 1951 से वर्ष 1990 के मध्य देश में 7 पंचवर्षीय योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया। सन् 1991 तक भारत के विकास की प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नलिखित रहीं –

1. सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार – देश में मूलभूत सुविधाओं तथा भारी एवं बुनियादी उद्योगों के विकास हेतु सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार किया गया। इस अवधि में इस्पात, विद्युत, उर्वरक, भारी मशीनों, रसायन, जहाज निर्माण आदि के कारखाने सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत स्थापित किए गए, फलतः देश में सार्वजनिक क्षेत्र का तेजी से विस्तार हुआ।

2. आत्मनिर्भरता – पंचवर्षीय योजनाओं में आत्मनिर्भरता प्राप्ति का लक्ष्य रखा गया था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विदेशी सहायता पर निर्भरता को कम किया गया। इस अवधि में कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त की गई तथा विशाल औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया गया।

3. विदेशी व्यापार – वर्ष 1991 तक आयातों पर नियंत्रण रखा गया। इस अवधि में केवल अनिवार्य वस्तुओं जैसे, मशीनरी, उर्वरक और पेट्रोलियम का ही मुख्य रूप से आयात किया गया। देश के उत्पादकों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाए रखने के लिए संरक्षण की नीति को अपनाया गया। फलतः इस अवधि में व्यापार धीमी गति से बढ़ा। कुल विश्व व्यापार में भारत का योगदान वर्ष 1951 में लगभग 1 प्रतिशत था जो घटकर वर्ष 1991 में केवल 0.6 प्रतिशत रह गया था।

4. राष्ट्रीय एवं प्रति व्यक्ति आय – वर्ष 1951 से 1991 की अवधि में राष्ट्रीय आय में औसतन 4.0 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई। इस अवधि में जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होने के कारण प्रतिव्यक्ति आय बहुत धीमी गति से बढ़ी।

5. रोजगार के अवसरों में वृद्धि – इस अवधि में यद्यपि रोजगार के अवसरों में वृद्धि के प्रयास किए गए तथापि यह समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती रही। वर्ष 1991 तक बेरोजगारी की समस्या अत्यधिक जटिल हो गई थी।

6. विदेशी मुद्रा का संकट – वर्ष 1951 से 1991 तक भारत ने आयातों को कम करने की नीति को अपनाया। किन्तु पेट्रोलियम पदार्थ, मशीनरी एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं के आयात हेतु भारत को विदेशी मुद्रा की आवश्यकता बनी रही। इन वस्तुओं के आयात हेतु भारत को बड़ी मात्रा में विदेशी ऋण लेना पड़े थे। फलतः भारत विदेशी मुद्रा के संकट में फंस गया था।

7. मूल्य वृद्धि – नियोजन की अवधि में भारत को लगातार मूल्य वृद्धि का सामना करना पड़ा था। प्रथम पंचवर्षीय योजना के बाद वर्ष 1956 से 1991 के मध्य भारत में मुद्रास्फीति की दर 5 से 6 प्रतिशत के मध्य रही।

प्रथम योजना को छोड़कर शेष सभी योजनाओं में मूल्य वृद्धि की समस्या बनी रही।

इस प्रकार स्पष्ट है कि वर्ष 1951 से 1991 के दौरान भारत ने अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की। किन्तु विदेशी व्यापार एवं विदेशी मुद्रा के क्षेत्र में भारत को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा था। एक स्थिति तो ऐसी आ गई थी कि भारत को विदेशी मुद्रा की प्राप्ति के लिए अपने स्वर्ण भण्डार को गिरवी रखकर ऋण लेना पड़ा था।

21.4 वैश्वीकरण एवं भारत (वर्ष 1991 के बाद भारत का विकास)

वर्ष 1991 से भारत ने नवीन आर्थिक नीति को अपनाया है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य विश्व में हुई प्रगति एवं तकनीकी ज्ञान का लाभ उठाकर देश में आर्थिक विकास की गति को तेज करना है। इस नीति के द्वारा देश में विद्यमान प्रशासनिक नियंत्रणों को समाप्त करके उदारीकरण का मार्ग प्रशस्त किया गया। इसके साथ ही निजी निवेश को प्रोत्साहित एवं विदेशी पूंजी को आकर्षित करने का प्रयास भी किया गया है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि नई नीति के द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था से जोड़कर एक नए अध्याय का श्रीगणेश किया गया है। वर्ष 1991 के बाद देश की अर्थव्यवस्था में हुए सुधार एवं वैश्वीकरण के प्रभाव निम्नलिखित हैं–

1. **आयात-निर्यात** – वर्ष 1991 में घोषित आयात – निर्यात नीति में निर्यात आधारित विकास पर जोर दिया गया है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु आयात एवं निर्यात पर लगे हुए प्रतिबन्धों तथा प्रशासनिक नियंत्रण को कम किया गया है। आयात – निर्यात नीति (2004-09) में आयातों एवं निर्यातों को और अधिक सुविधाजनक बनाया गया है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भारत विश्व व्यापार संगठन का प्रारम्भ से ही सदस्य है। इसके कारण भारतीय बाजारों को विश्व के अन्य देशों के लिए खोलने एवं स्वतंत्र व्यापार को बढ़ाने के प्रति वचनबद्ध है। पिछले वर्षों में आयात शुल्क कम करने का भारतीय अर्थव्यवस्था पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है। कुल विश्व व्यापार में भारत के विदेशी व्यापार का योगदान वर्ष 1990 में 0.6 प्रतिशत से बढ़कर अब लगभग 1.0 प्रतिशत हो गया है।

2. **औद्योगीकरण** – वर्ष 1991 को घोषित औद्योगिक नीति और बाद में किए गए सुधारों के कारण देश में औद्योगीकरण में तेजी आई है। अब सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत आरक्षित उद्योगों की संख्या केवल 3 रह गई है। इसका अर्थ यह है कि निजी क्षेत्र को अपने विस्तार के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो गए है। औद्योगिक नीति के अनुसार देश में अब उदारीकरण एवं निजीकरण की नीति को अपनाया जा रहा है। अर्थव्यव्था के अनेक क्षेत्र अब विदेशी निवेश के लिए खोल दिए गए हैं। इस नई औद्योगिक नीति के परिणामस्वरूप देश में विकास दर लगभग 9 प्रतिशत हो गई है।

3. **विदेशी निवेश में वृद्धि** – वैश्वीकरण के बाद अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने भारत में अपने निवेश में वृद्धि की है। इन कम्पनियों ने सेलफोन, मोटर गाड़ियाँ, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, ठंडे पेय पदार्थों, जंक खाद्य पदार्थों एवं बैंकिग जैसी सेवाओं के निवेश में रुचि दिखाई है। इन उद्योगों और सेवाओं में नये रोजगार के अवसर उत्पन्न हुए हैं। इसके साथ ही, इन उद्योगों को कच्चे माल आदि की आपूर्ति करने वाली स्थानीय कम्पनियों को लाभ हुआ है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 1991 के बाद देश में विदेशी निवेश में वृद्धि हुई है और परिणामस्वरुप अर्थव्यवस्था को लाभ हुआ है।

4. **उपभोक्ताओं को लाभ** – वैश्वीकरण के बाद विदेशी एवं स्थानीय उत्पादकों के मध्य परस्पर प्रतियोगिता में वृद्धि हुई है और परिणामस्वरूप अनेक वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतें कम हुई हैं। इससे उपभोक्ताओं को उत्कृष्ट गुणवत्ता वाली वस्तुएँ प्राप्त हो रही हैं। अब उपभोक्ताओं को पहले से अधिक विकल्प उपलब्ध हैं। परिणामस्वरूप उपभोक्ता वर्ग पहले की तुलना में उच्चतर जीवन स्तर का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

5. **भारतीय कम्पनियों को लाभ** – वैश्वीकरण ने अनेक भारतीय कम्पनियों को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के रुप में स्थापित किया है। इन कम्पनियों ने विश्व स्तर पर अपने क्रियाकलापों का विस्तार किया है। उदाहरणार्थ– टाटा मोटर्स, इंफोसिस, रैनबैक्सी, ऐशियन पेंट्स, सुन्दरम फास्नर्स को लिया जा सकता है जो अब बहुराष्ट्रीय कम्पनिया बन गई हैं। भारतीय कम्पनियों ने विदेशी कम्पनियों से प्रतियोगिता करने के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकी को अपनाया है और उत्पादन के मानकों का ऊचा उठाया है। कुछ कम्पनियों ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से सहयोग करके अपनी स्थिति को सुधारा है।

6. **सेवा क्षेत्र का विस्तार** – वैश्वीकरण ने संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवीन लाभप्रद सेवाओं का विस्तार किया है। एक भारतीय कम्पनी द्वारा लन्दन स्थित कम्पनी के लिए पत्रिका का प्रकाशन और कॉल सेन्टर्स इसके उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त डाटा एन्ट्री, लेखाकरण, प्रशासनिक कार्य, इंजीनियरिंग जैसी कई सेवाएँ भारत जैसे देशों में उपलब्ध है। ये सेवाएँ विकसित देशों को निर्यात की जाती हैं। भारत को साफ्टवेयर की सेवाओं के निर्यात के द्वारा भी बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा प्राप्त हो रही है।

21.5 वैश्वीकरण से उत्पन्न समस्याएँ

यह कहना सही नहीं है कि वैश्वीकरण से भारत को केवल लाभ ही हुआ है। वास्तविकता यह है कि वैश्वीकरण से अनेक समस्याएँ भी पैदा हुई हैं। ये समस्याएँ निम्नलिखित हैं –

1. **छोटे उत्पादकों पर प्रभाव** – भारत के अनेक छोटे उद्योगों पर वैश्वीकरण का बुरा प्रभाव पड़ा है। विदेशों में उत्पादित माल से प्रतियोगिता करने में छोटे उद्योग सक्षम नहीं हैं। परिणामस्वरुप अनेक छोटे उद्योग बन्द हो गए हैं। बैटरी, संधारित, प्लास्टिक, खिलौने, टायर, डेयरी उत्पादों एवं खाद्य तेल के उद्योगों की स्थिति अत्यधिक खराब है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भारत में लघु उद्योगों में कृषि के बाद सबसे अधिक लोगों को रोजगार प्राप्त है।

2. **रोजगार में अनिश्चितता** – वैश्वीकरण के कारण श्रमिकों के जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। बढ़ती प्रतियोगिता के कारण अधिकांश नियोक्ता इन दिनों श्रमिकों को रोजगार देने में लचीलापन पसन्द करते हैं। इसका अर्थ यह है कि श्रमिकों का रोजगार अब सुनिश्चित नहीं है। कारखाने के मालिक लागत को कम करने के उद्देश्य से श्रमिकों को अब अस्थाई रोजगार प्रदान करते हैं, ताकि उन्हें वर्ष भर वेतन नहीं देना पड़े। इसके साथ ही श्रमिकों को बहुत लम्बे कार्य-घंटों तक काम करना पड़ता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के कारण मिले लाभ में श्रमिकों को न्यायसंगत हिस्सा नहीं दिया जा रहा है।

3. **सभी लोगों को लाभ नहीं** – अनुभव यह बताता है कि वैश्वीकरण सभी के लिए लाभप्रद नहीं रहा है। शिक्षित, कुशल और सम्पन्न लोगों ने वैश्वीकरण से मिले नये अवसरों का सर्वोत्तम उपयोग किया है। इसके विपरीत, अनेक लोगों को लाभ में हिस्सा नहीं मिला है। नन्दीग्राम की घटना यह दर्शाती है कि जिन लोगों की भूमि अधिग्रहित की गई हैं, उनको विशेष आर्थिक क्षेत्र कार्यक्रम का समुचित लाभ प्राप्त नहीं हुआ है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि समाज का कमजोर एवं गरीब वर्ग वैश्वीकरण के लाभों से दूर है।

4. **विकसित देशों का वर्चस्व** – वैश्वीकरण की प्रक्रिया विश्व व्यापार संगठन के निर्देशानुसार क्रियान्वित की जा रही है। किन्तु इस संगठन में विकसित देशों का वर्चस्व अधिक है। ये देश उन्हीं नीतियों एवं कार्यक्रमों का समर्थन करते हैं जिनसे उन्हें लाभ प्राप्त होता है। श्रमिकों के लिए इन देशों ने अपने बाजार नहीं खोले हैं। इसी प्रकार कृषि को दी जाने वाली सब्सिडी पर भी कोई निर्णय नहीं हुआ है। अत: यह आवश्यक है कि विकसित देशों के वर्चस्व को समाप्त किया जाए और ऐसे वैश्वीकरण को विकसित किया जाए जिसमें सभी देशों को लाभ हो।

5. **क्षेत्रीय विषमताएँ** – वैश्वीकरण से क्षेत्रीय विषमताएँ बढ़ी हैं। जिस प्रकार वैश्वीकरण से विकासशील

देशों की तुलना में विकसित देशों को अधिक लाभ मिला है, ठीक इसी प्रकार देश के अन्दर भी विकसित क्षेत्रों को पिछड़े क्षेत्रों की तुलना में अधिक लाभ प्राप्त हुआ है। इस प्रकार वैश्वीकरण के लाभ सभी क्षेत्रों के लोगों को प्राप्त नहीं हुए हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि वैश्वीकरण से भारतीय अर्थव्यवस्था पर अच्छे एवं बुरे दोनों प्रभाव पड़े है। वास्तविकता यह है कि वैश्वीकरण से उद्योग-धंधों को लाभ हुआ है और विश्व बाजार में हमारी पहुँच हो गई है। अनेक भारतीय उत्पादकों ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का स्वरुप प्राप्त कर लिया है। भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर भी लगभग 9 प्रतिशत से अधिक हो गई हैं। उपभोक्ताओं को अब विश्व स्तर की वस्तुएँ प्राप्त होने लगी हैं।

किन्तु, वास्तविकता यह है कि वैश्वीकरण के लाभ सभी वर्गों के लोगों को समान रुप से नहीं मिले हैं। अनेक लघु एवं छोटे उद्योग प्रतियोगिता के कारण बन्द हो गए हैं। भारत जैसे विकासशील देशों में विद्यमान गरीबी एवं बेरोजगारी जैसी समस्याएँ और अधिक जटिल हो गई हैं। इसके साथ ही विश्व व्यापार संगठन पर विकसित देशों का वर्चस्व होने के कारण वैश्वीकरण के लाभ विकासशील एवं पिछड़े देशों को नहीं मिल पा रहे हैं। नए श्रमिक कानूनों का भी मजदूर वर्ग पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा है। अतः आवश्यकता है कि 'न्यायसंगत' वैश्वीकरण के लिए प्रयास किए जाएं। वैश्वीकरण सभी समस्याओं का निदान नहीं है। वैश्वीकरण की सफलता 'आत्मनिर्भरता' पर अधिक निर्भर है। भारत का स्वदेशी आन्दोलन इसी पर आधारित है, जिसे महात्मा गांधी सहित कई विभूतियों ने अपनाया था।

शब्दावली

बहुराष्ट्रीय कम्पनी - एक ऐसी कम्पनी जिसका उत्पादन एवं बिक्री से संबंधित कार्य एक से अधिक देशों में फैला हुआ है।

वैश्वीकरण - जब विश्व के सभी देश व्यापार की उदार नीतियों को अपनाते हैं और परिणामस्वरूप सम्पूर्ण विश्व के बाजारों का एकीकरण हो जाता है।

उदारीकरण - प्रशासकीय नियंत्रणों को कम करके स्वतंत्र व्यापार की नीतियों को अपनाना उदारीकरण कहलाता है।

मुद्रा स्फीति - वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतों में निरंतर वृद्धि को मुद्रा स्फीति कहा जाता है।

श्रम विभाजन - किसी वस्तु की उत्पादन प्रक्रिया को विभिन्न उप-क्रियाओं में बाँटना और प्रत्येक उप-क्रिया को अलग-अलग श्रमिकों से कराना श्रम विभाजन कहलाता है।

विश्व व्यापार संगठन - एक ऐसा संगठन जो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को उदार बनाने के लिए स्थापित किया गया है। इसकी स्थापना 1995 में की गई तथा सन् 2006 तक इसके 149 देश सदस्य थे।

विशेष आर्थिक क्षेत्र - निर्यात व्यापार में वृद्धि के उद्देश्य से निजी उद्यमियों को उद्योग लगाने हेतु प्रेरित करने की योजना।

अभ्यास

सही विकल्प चुनिए

1. वैश्वीकरण ने जीवन स्तर में सुधार किया है –

   (i) गरीब वर्ग का (ii) उच्च वर्ग का

   (iii) ग्रामीण क्षेत्रों का (iv) समाज के सभी वर्गों का

2. वैश्वीकरण से कौन-से उद्योग बन्द हो गए हैं –

   (i) बड़े पैमाने के उद्योग (ii) बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ

   (iii) लघु उद्योग (iv) सभी प्रकार के उद्योग

3. भारत में वैश्वीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई है –

   (i) सन् 1947 से (ii) सन् 1951 से

   (iii) सन् 1991 से (iv) सन् 2001 से

4. विश्व व्यापार संगठन की स्थापना हुई है –

   (i) सन् 1985 (ii) सन् 1995

   (iii) सन् 2001 (iv) सन् 2005

5. वैश्वीकरण का मुख्य आधार है –

   (i) विदेशी व्यापार (ii) आन्तरिक व्यापार

   (iii) उन्नत कृषि व्यापार (iv) लघु उद्योग

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. वर्तमान में आरक्षित उद्योगों की संख्या .... है।
2. वैश्वीकरण के अन्तर्गत विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं के मध्य वस्तुओं एवं सेवाओं का .... आवागमन होता है।
3. विभिन्न देशों में उत्पादन करने वाली कम्पनियों को .... कहा जाता है।

अति लघुउत्तरी प्रश्न

1. वर्ष 1991 से पूर्व भारत के विदेशी व्यापार की क्या नीति थी?
2. एक से अधिक देशों में उत्पादन करने वाली कम्पनियों को क्या कहा जाता है?
3. वैश्वीकरण से किस उपभोक्ता वर्ग को अधिक लाभ हुआ है?
4. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से आप क्या समझते हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. विदेशी व्यापार क्या है?
2. बाजारों का एकीकरण क्या है?
3. वैश्वीकरण का छोटे उत्पादकों पर क्या प्रभाव पड़ा है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. वैश्वीकरण से आप क्या समझते हैं? वैश्वीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने वाले कारणों की विवेचना कीजिए।
2. विदेशी व्यापार विभिन्न देशों के बाजारों के एकीकरण में किस प्रकार मदद करता है, लिखिए।
3. वैश्वीकरण के बाद भारत की आर्थिक स्थिति की व्याख्या कीजिए व वैश्वीकरण से उत्पन्न समस्याओं की विवेचना कीजिए।